Part - III Paper - VI Unit-2

Evolution of Human Races

S. Mazumdar

मानव प्रजाति या नृवंश एक जैविक विचार है, इसके अनुसार मानव वर्ग, वंशानुक्रम के द्वारा शारीरिक लक्षणों में समानता रखता है, मानव प्रजाति में कई वर्ग है जिनकी भिन्नता का आधार शारीरिक बनावट के लक्षण होते हैं, ये शारीरिक लक्षण उस मानव समूह में वंशानुक्रमण द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता है।

अनेक विद्वानों ने प्रजाति को निम्नरूपेण परिभाषित किया है :-

क्रिश्चियन टेलर :→ "मानव प्रजाति नस्ल को प्रकट करती है ना कि सभ्यता को।

मेण्डल :→ "मानव शरीर में जीन्स (Genes) इतने सूक्ष्म कोष होते हैं कि इनके द्वारा मानव वर्गों के शारीरिक लक्षण, वंश में पीढ़ी दर पीढ़ी चलते रहते हैं।"

क्रोबर :- "प्रजाति एक प्रमाणित प्राणीशास्त्रीय अवधारणा है, यह एक समूह है जो वंशानुक्रमण, वंश या प्रजातीय गुण अथवा उपसमूह के द्वारा जुड़ा हुआ है, यह सामाजिक - सांस्कृतिक अवधारणा नहीं है।"

अतः एक मानव प्रजाति का अभिप्राय उस मानव वर्ग से है, जिसके सभी मनुष्यों की शारीरिक रचना के बाहरी लक्षण, जैसे शरीर का कद, त्वचा का रंग, सिर की लम्बाई चौड़ाई, बालों की आकृति, नेत्रों की आकृति और रंग, होंठो की मोटाई, नाक का चपटापन या नुकीलापन इत्यादि एक जैसे हों तथा उनके रक्तवर्ग भी एक जैसे हो।

प्रजाति शब्द का गलत प्रयोग :-

साधारणतः प्रजाति शब्द का गलत प्रयोग भाषा वर्गों या सामाजिक वर्गों के लिए किया जाता है, यह गलत है, वास्तव में प्रजाति शब्द केवल उन वर्गों के लिए होना चाहिए जो वंशानुक्रम में समान प्रकार की शारीरिक रचनाओं वाले पूर्वजों के वंशज हो।

मानव प्रजाति कोई कबीला या जनजाति भी नहीं होता, ये सिर्फ किसी विशेष प्रदेश के लोग होते हैं,

एवं मानव प्रजाति का
मानव का उद्गम :→ मानव उत्पत्ति के संबंध में वैज्ञानिकों का मत है कि टरशियरी युग के शुरू में मानव का विकास शुरू हुआ था, जीव विकास की कड़ी में मानव की शाखा एक ड्रायोपिथीकस प्रकार के वानर रूपी अर्ध्द मानव की शाखा से अलग हुई है। माना जाता है, मध्य एशिया ही मानव उद्गम का क्षेत्र रहा, विभिन्न अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि मानव के पूर्वजों का आदि उद्गम क्षेत्र शिवालिक का द॰ प्रदेश रहा, ये आदि मानव समय के साथ विभिन्न जलवायविक परिवर्तन के साथ बदलते चले गए और विकास का क्रम बदलकर वर्तमान मानव "होमो-सेपियन" बना, आदिमानव से वर्तमान मानव के बीच की कड़ियों को निम्न रूपों में जाना जाता है।

1) पिथेकैनथ्रोपस 2) सिनेनथ्रोपस 3) हाइडिलबर्ग मानव
4) रोडेशियन मानव 5) निएण्डरथल मानव।

वर्तमान मानव के उद्गम के बाद मध्य एशिया में चार बार हिमयुग और उनके बीच गर्म जलवायु आते रहे। वातावरण की दशाओं तथा जलवायु में परिवर्तन के साथ मानव प्रजाति अपने स्थान से बाहर भीतर अर्थात प्रवास होते रहें, जिससे उनकी शारीरिक रचनाओं में नए परिवर्तन भी हुए। इन नए परिवर्तनों के कारण कई प्रजातियाँ बनी जिनमें शारीरिक भिन्नतायें लगातार स्थायी होती गई। ये विभिन्नताओं के स्थायी होने की दो विधि थी i) छाँट ii) वंशानुक्रम, इन दोनों के पुनः चार कारण थे जिनसे विभिन्न प्रजातियाँ बनी, वे हैं –

1) जलवायु में परिवर्तन।
2) ग्रंथिरसों के द्वारा परिवर्तन।
3) जैव परिवर्तन।
4) प्रवास द्वारा प्रजातीय मिश्रण।

मानव प्रजाति के अभिलक्षण :– मानव प्रजातियों के वर्गीकरण में केवल बाह्य शारीरिक लक्षणों के आधार का महत्व होना चाहिए। क्योंकि वातावरण

के परिवर्तन या ग्रंथि रसों के कारण परिवर्तन सिर्फ मनुष्य के शरीर में बाहरी लक्षणों में होता है, सभी प्रजातियों में बौद्धिक विकास, चारित्रिक गुण समान ही होते हैं अतः प्रजातियों का वर्गीकरण सिर्फ शारीरिक लक्षणों पर होना चाहिए।

प्रजातियों के वर्गीकरण में एक दो शारीरिक लक्षणों को आधार न मानकर कई अभिलक्षणों को आधार माना जाता है जो निम्न प्रकार से हैं,

क) सिर की बनावट: शिरस्य सूचकांक → इसमें सिर की बनावट को ज्ञात किया जाता है जिसका सूत्र है शिरस्य सूचकांक = सिर की चौड़ाई / सिर की लम्बाई × 100

इसके आधार पर 75 से कम, 75-80 के बीच, 80 से अधिक प्रतिशत के आधार पर मानव प्रजाति निर्धारित होती है, यह सूचकांक अधिक स्थायी रहने वाला होता है।

उसी प्रकार कपाल का उन्नतांशीय सूचकांक नासा सूचकांक, कपाल धारिता, जबड़ों का फैलाव आदि के आधार पर प्रजातिय वर्गीकरण होता है।

ख) त्वचा का रंग — मानव प्रजाति को दूर से ही विभेद करने वाला आधार त्वचा का रंग आता है, मनुष्य त्वचा में मैलेनिया, कैरोटीन या हीमोग्लोबिन की मात्रा को घट बढ़ से चमड़े का रंग काला, पीला या लाल हो जाता है। त्वचा रंग के आधार पर मानव प्रजाति को श्वेत, पीला तथा काला प्रजाति में बाँटा जाता है, इस आधार पर मानव प्रजाती तीन है — नीग्रोइड - काली प्रजाति
मंगोलॉइड - पीली प्रजाति
काकेशॉयड - श्वेत प्रजाति

ग) बालों की बनावट → मानव के बालो पर वातावरण आयु, लिंग, जलवायु तथा भोजन का कम प्रभाव पड़ता है बल्कि यह वंशानुक्रम द्वारा निर्धारित होती है। बालों की बनावट की दृष्टि से पाँच भाग है जिनका आधार है बालों का आकार, बालों का रंग, बालों का अर्धव्यास तथा बालों की लम्बाई।

घ) शरीर का कद → प्रजातियों के वर्गीकरण में शरीर

की ऊँचाई की नाप भी महत्वपूर्ण है, इस आधार पर

148 cm – 158 cm	–	नाटा कद
159 cm – 168 cm	–	मझेला कद
169 cm – 172 cm	=	लंबा कद
172 cm से ऊपर	–	बहुत लंबा कद,

उपरोक्त के अलावा होंठ के आकार, मुखाकृति भी वर्गीकरण के प्रमुख आधार हैं।

मानव प्रजातियों का वर्गीकरण :–

मानवशास्त्रियों ने प्रजातियों को परिभाषित कर उनके शारीरिक अभिलक्षणों के आधार पर कई प्रकार के वर्गीकरण प्रस्तुत किए हैं, विभिन्न मानवशास्त्रियों ने अपने वर्गीकरण में भिन्न-भिन्न शारीरिक लक्षण, सामान्य पूर्वज, दैहिक विशेषताएँ, आकृति तथा भौगोलिक स्थिति को महत्व दिया है।

जैसे- वार्नेयर, लीनियन ने त्वचा के आधार पर, ब्लूमेनबैक ने त्वचा के रंग, बाल, चेहरे तथा खोपड़ी के आधार पर वर्गीकरण किया है, ऐसे अनेक विद्वानों में से क्रोबर तथा टेलर महोदय के प्रजातिय वर्गीकरण का उल्लेख किया जा रहा है।

क्रोबर महोदय ने वर्तमान प्रजातियों को तीन मुख्य वर्ग यथा कॉकेशियन या श्वेत, मंगोलॉयड या पीत एवं नीग्रोयड या काली में विभक्त किया है। पुनः वे इनके 11 उपविभाग भी किए, साथ ही चार संदेहास्पद प्रजातियों का उल्लेख भी किया है।

ग्रिफिथ टेलर महोदय ने शीर्ष सूचकांक तथा बालों की बनावट के आधार पर मानव प्रजातियों का वर्गीकरण किया, सन 1919 में जलवायु चक्र जातियों के विकास का प्रवास सिद्धान्त के आधार पर उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रारंभ की पाँच मानव प्रजातियों यथा नीग्रो, नीग्रिटो, ऑस्ट्रेलॉयड, भूमध्यसागरीय एवं अल्पाइन की उत्पत्ति मध्य एशिया में महा हिम युग से पहले हुई थी और वहीं से ये जातियाँ अन्य

महाद्वीपों में फैली। जलवायु में परिवर्तनों के साथ-साथ मानव प्रजातियों के भौतिक लक्षणों में विभिन्नता उत्पन्न होती रही। टेलर महोदय के अनुसार 7 मानव प्रजातियाँ निम्नवत है।

1) नेग्रिटो – बहुत पतला सिर।
2) नीग्रो – बहुत लम्बा सिर।
3) ऑस्ट्रेलॉइड – लम्बा सिर।
4) मेडिटेरेनियन – मंझला लम्बा सिर।
5) नॉर्डिक – मध्यम सिर।
6) अल्पाइन – चौड़ा सिर।
7) मंगोलिक – बहुत चौड़ा सिर।

उपरोक्त प्रजातियों का वर्गीकरण मुख्यतः उनके औसत शिरस्थ सूचकांक पर आधारित है लेकिन गौण रूप से उनके बाल, कद, त्वचा का रंग आदि को भी सम्मिलित किया गया है।

— X —